मुखपृष्ठ
साहित्यकारों की वेबपत्रिका
साहित्यसुधा
वर्ष: 5, अंक 95,अक्तूबर(द्वितीय), 2020

गाँधी जयंती पर विशेष:

गाँधी हैं आत्मनिर्भर भारत का मंत्र !

डॉ० घनश्याम बादल

गाँधी की यादें लेकर दो अक्टूबर फिर आ गया । गाँधी उस खुश्बू की तरह हैं जो बार-बार चाहने या न चाहने पर भी हिंदुस्तान की हवा में तैरती रहती है । इस बार की गाँधी जयंती कुछ अलग ही परिस्थितियों में आई है न भौतिक रूप से सर्वधर्म समभाव सभा संभव है न ही गाँधी की याद में होने वाली सभाएं हो सकती हैं इस कोरोनाकाल में और न ही जनसमूह इकट्ठा होकर उन्हें श्रद्धांजलि दे सकता है मगर, इससे गाँधी पर कोई फर्क नहीं पड़ने वाला क्योंकि गाँधी महज़ दो अक्टूबर को याद किए जाने वाली शख्सियत नहीं वरन इस देश की मिट्टी में दबा वह बीज है जो मिटता नहीं है ।

युगपुरुष घोषित हो चुके गाँधी में भविष्य को देखने की एक दिव्य दृष्टि थी तभी तो 15 अगस्त 1947 को आजाद होने वाले भारत को उन्होंने कुछ ऐसे जंतर और मंत्र दिए जो आज भी उतने ही प्रासंगिक एवं उपयोगी हैं जितने तब थे जब गाँधीजी देश की आजादी के लिए अहिंसा का अभूतपूर्व अस्त्र लेकर संघर्ष कर रहे थे ।

आज गाँधी के बारे में उनके विरोधी कुछ भी कहें, उन पर कितने भी इल्जाम लगाएं, उनके निर्णय पर कितनी भी उंगलियां उठाएं लेकिन काल की शिला पर गाँधी ने जो लिखा वह बार-बार घिसे जाने पर भी न मिटता है और न ही उसकी चमक कम होती है।

वही गाँधी, जिन्हे दुनिया मूल नाम 'मोहन' से कम और व सरनेम 'गाँधी' से ज्यादा जानती है । वही गाँधी जिसे दुनिया ने महामानव, महात्मा आदि न जाने किस किस उपाधि से अलंकृत किया, वही गाँधी जिसके बारे में आइंसटीन ने तो यहां तक कह दिया था कि हाड़ मांस से बना ऐसा मानव सदियों में एक बार ही पैदा होता है ।

डेढ़ पसली के कृशकाय गाँधी एक ऐसी रक्तहीन क्रांति के अगवा बने जैसी न उससे पहले कभी हुई थी और न ही उसके बाद हुई है । काल के पहिए के अनगिन चक्करों ने न जाने कितने महापुरुषों को अर्श से फर्श दिखाए पर गाँधी शिखर पर बने हुए हैं ।

यह उपयोगितावाद का युग है जिसमें आदमी भी वस्तुओं की तरह काम का होने पर ही याद आता है और आज कोरोना के आपदा काल में गाँधी की उपयोगिता और भी बढ़ गई है ।

आज जब वर्तमान प्रधानमंत्री नरेंद्र दामोदर दास मोदी देश को आत्मनिर्भरता का पाठ पढ़ा रहे हैं, 'वोकल फॉर लोकल' का आह्वान कर रहे हैं और जब देश में जीवन में सादगी व स्वच्छता लाने की बात की जाती है तब गाँधी याद आते हैं क्योंकि गाँधी ही वह शख्स थे जिन एवं जिन्होंने देश को आत्मनिर्भरता स्वदेशी एवं स्वराज जैसे विचार दिए।

गाँधीजी जानते थे के कि किसी भी राष्ट्र का विकास स्थानीय संसाधनों के विकास पर निर्भर करता है इसलिए उन्होंने आजादी से पहले ही स्वदेशी आंदोलन के माध्यम से स्वदेशी की अवधारणा को बल दिया कृषि व कुटीर उद्योगों के साथ-साथ बुनियादी शिक्षा पर बल दिया जिससे कि देश का आम आदमी अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति स्थानीय संसाधनों से करते हुए जीवन सुचारु रुप से चला सके ।

समय के साथ प्रौद्योगिकी आई, वैश्विक व्यापार की बातें जोर पकड़ती गई, भूमंडलीकरण की अवधारणा ने पैर पसारे और समय की मांग को देखते हुए हिंदुस्तान भी उसी रौ में बहने लगा मगर समय ने एक बार फिर सिद्ध कर दिया है कि विदेशों से कितने भी संसाधन यह सुविधाएं आए लेकिन 140 करोड़ लोगों की आवश्यकताओं की सम्यक पूर्ति यदि कहीं से होगी तो वह स्वदेशी उत्पादों से ही संभव होगा क्योंकि विदेशों से आयात में विदेशी मुद्रा का भारी खर्च होता है वह चीजें महंगी भी पड़ती है तथा विदेशी वस्तुओं के उपयोग की प्रवृत्ति बढ़ने से देसी कुटीर उद्योग नष्ट होने लगते हैं और ऐसा हुआ भी । आज समय की नजाकत को देखते हुए एक बार फिर से प्रधानमंत्री यदि वोकल फॉर लोकल की बात करते हैं तो यह साफ संकेत है कि हम परोक्षन्न रूप से गाँधी एवं गाँधीवाद को मान्यता दे रहे हैं।

गाँधी का अवदान इस देश के लिये अमूल्य है, मगर जो लोग गाँधी व उनके अवदान के बारे में जानते हैं वें या तो किनारे लगा दिये गये हैं या इतना बदल गये हैं कि गाँधी को याद नहीं करते । हां ,आज के युग की सीधी - सच्ची गुणा भाग है कि जो बिकता है वही टिकता है।

जो काम का है ,वही सर आंखों पर रखा जाता है और बदकिस्मती से नई पीढ़ी के लिये गाँधी अब बहुत ज्यादा महत्व नहीं रखते सो धीरे - धीरे उन्हे भुलाया जा रहा है ।

लेकिन आम आदमी के लिए गाँधी आज भी पूज्य हैं, जब गाँधी के अधिकांश समकालीन या परवर्ती महान नाम या तो गायब हो चुके हैं या भुला दिये गये हैं तब भी उनका 'टालिज्म' व प्रभामंडल चमकदार है । यदि ऐसा है तो कोई तो बात है गाँधी में जोउन्हें बहुत ज्यादा उपयोगी न होने के बावजूद भी न केवल जिंदा रखे है अपितु मान सम्मान दिला रहा है ।

अब देखें गाँधी का सबसे बड़ा बल क्या था ? तो जान लें कि गाँधी का सबसे बड़ा बल था उनकी दृढ़ता। भले ही सारी दुनिया ने उनकी आलोचना की पर गाँधी निडर रह कर वही करते थे जो उनकी आत्मा को गवारा होता था वे न किसी से डरते थे, न ही दबते थे बेखौफ जीने का यही अंदाज गाँधी की ताकत था । बेशक, गाँधी के निर्णय कई बार विवाद के सबब बने पर, गाँधी अपने मन की करते रहे अब इस पर बहस की जा सकती है कि वें सही थे कि गलत ।

गाँधी का अहिंसावाद , उनका निर्धन के प्रति प्रेम , महिला हितों के प्रति लगाव , बेसिक शिक्षा का सिद्धांत , आखिरी आदमी तक आजादी का सुख पंहुचाने का संकल्प किसी भी कीमत पर हिंसा का सहारा न लेने का जिद भरा दुःसाहस, सत्य के साथ अनवरत प्रयोग , हथियरों के सामने निहत्थे अड़ने व लड़ने का जज्बा , किसी भी मन को न भाती बात या मुद्दे पर अनषन पर बैठ जाना गाँधी को अपने समय के दूसरे नेताओं से अलहदा करता है ।

सत्ता में कोई भी रहे पर गाँधी हर हाल में कायम रहते हैं । वर्तमान प्रधानमंत्री ने तो उन्हे उनकी पैतृक संस्था से छीन ही लिया है तभी तो आज भी गाँधी का स्वच्छता अभियान जारी है शिक्षा में हम बैक टू बेसिक की तरफ लौट रहे हैं । नई शिक्षा नीति के मसौदे में गाँधी दर्शन और उनकी व्यवहारिकता की झलक साफ दिखाई देती है जब वह किताबी ज्ञान के बजाय व्यवहारिक कौशल के विकास पर बल देने की बात करती है यह भी है गाँधी की वैचारिक परिपक्वता एवं दूर दृष्टि का एक और प्रमाण ।

आज तो देश में गाँधी के राज्य का ही एक शख्स देश का नायक है । वह भी उसी बिरादरी से है जिससे गाँधी थे पर, उसके व गाँधी के दर्शन में भारी अंतर है वह देश को तकनीकी के बल पर , डिजिटल बनाकर , आभासी दुनिया के माध्यम से आकाशों में ले जाना चाहता है । पर,

गाँधी की जरुरत उसे भी पड़ी और उसने गाँधी को केवल कांग्रेस की बपौती होने के चस्पा लेबल से निकाल सबका गाँधी बना दिया ।

गाँधी कुटीर उद्योगों के माध्यम से रोजगार को हर हाथ तक पंहुचाकर हिंदुस्तान बनाने का सपना पाले थे । और स्किल इंडिया का पैगाम भी कमोबेश यही है स्वदेशी के प्रोत्साहन के लिए 'मेक इन इंडिया' कार्यक्रम पर बल भी गाँधीजी के चिंतन कर मुहर लगाने जैसा ही मानना चाहिए ।

एक बात तो है कि गाँधी रोज - रोज पैदा नहीं होते या यूं कहिए कि गाँधी पैदा होते ही नहीं बल्कि गाँधी बनना पड़ता है गढ़ना पड़ता है । गाँधी बनने के लिए अड़ने , लड़ने , कुव्वत से काम पर जुटने , आखिरी अंजाम तक पंहुचने से पहले किसी भी हालत में न थकने और न ही रुकने का दम चाहिए । हिंसा व ताकत के खिलाफ लड़ने के लिए अविजेय आत्मबल चाहिए , सुविधाओं को लात मारने की निस्पृहता चाहिए , पद से दूर रहने व सत्ता से न घबराने का दिल चाहिए तब कहीं जाकर थोड़ा बहुत 'महात्मा 'बना जा सकता है और गाधी ने उस काल में महात्मा बनकर दिखाया जब काल सर पर खड़ा दिखता था ऐसे काम करने वालों को । बेशक बेहतरी के लिए आज भारत को एक और गाँधी चाहिए । ऐसा गाँधी जिसके पास नई सोच हो, नया हिंदुस्तान बनाने का जज़्बा हो और जो सर्वहारा वर्ग की चिंता करने वाला, चिंतनशील नायक बनकर उभर सके । यह तो आप मान ही लीजिए कि इस देश का कल्याण गाँधी के जंतर मंतर से बेहतर और कोई नहीं कर सकता।

(लेखक वरिष्ठ स्तंभकार एवं स्वतंत्र पत्रकार हैं)

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें